اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ

मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[47] और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿۲۸﴾ ع

ع ٢ ٨ ١٠ النصف

सब मुसलमान औ़रतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही[48]

ايَاتُهَا ٢٨ ﴿٧٢﴾ سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ ﴿٤٠﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٢

सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا

तुम फ़रमाओ[2] मुझे वह्य हुई कि कुछ जिन्नों ने[3] मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना[4] तो बोले[5] हम ने एक अ़जीब

عَجَبًا ۙ﴿۱﴾ يَّهْدِيْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ لَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾ وَّ

क़ुरआन सुना[6] कि भलाई की राह बताता है[7] तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे और

اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّ اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ

येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औ़रत इख़्तियार की और न बच्चा[8] और येह कि हम में का

سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ

बे वुक़ूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था[9] और येह कि हमें ख़याल था कि हरगिज़ जिन्न और आदमी

عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّ اَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ

अल्लाह पर झूट न बांधेंगे[10] और येह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह

47 : कि वोह दोनों मोमिन थे 48 : अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उन की क़ौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया। 1 : सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, अठाईस 28 आयतें, दो सो पचास 250 कलिमे, आठ सो सत्तर 870 ह़र्फ़ हैं। 2 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 3 : नसीबैन के जिन की ता'दाद मुफ़स्सिरीन ने नव 9 बयान की। 4 : नमाज़े फ़ज्र में ब मक़ामे नख़्ला मक्कए मुकर्रमा व त़ाइफ़ के दरमियान 5 : वोह जिन्न अपनी क़ौम में जा कर 6 : जो अपनी फ़साह़तो बलाग़त व ख़ूबिये मज़ामीन व उ़लुव्वे मा'ना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक़ का कोई कलाम उस से कोई निस्बत नहीं रखता और उस की येह शान है 7 : या'नी तौह़ीद व ईमान की। 8 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे जिन्नो इन्स कहते हैं। 9 : झूट बोलता था बे अदबी करता था कि उस के लिये शरीक व औलाद और बीबी बताता था। 10 : और उस पर इफ़्तिरा न करेंगे, इस लिये हम उन की बातों की तस्दीक़ करते थे जो कुछ वोह शाने इलाही में कहते थे और ख़ुदावन्दे आ़लम की त़रफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे, यहां तक कि क़ुरआने करीम की हिदायत से हमें उन का किज़्ब व बोहतान ज़ाहिर हो गया।

www.dawateislami.net

الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّ اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ

लेते थे[11] तो इस से और भी उन का तकब्बुर बढ़ा और येह कि उन्हों ने[12] गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है[13] कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल

اَحَدًا ۙ﴿۷﴾ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا

न भेजेगा और येह कि हम ने आस्मान को छुवा[14] तो उसे पाया कि[15] सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से

وَّ شُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ

भर दिया गया है[16] और येह कि हम[17] पहले आस्मान में सुनने के लिये कुछ मौक़ओं पर बैठा करते थे फिर अब[18] जो कोई सुने

يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي

वोह अपनी ताक में आग का लूका (लपट) पाए[19] और येह कि हमें नहीं मा'लूम कि[20] ज़मीन वालों से कोई बुराई का

الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنَّا

इरादा फ़रमाया गया है या उन के रब ने कोई भलाई चाही है और येह कि हम में[21] कुछ नेक हैं[22] और कुछ

دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي

दूसरी त़रह़ के हैं हम कई राहें फटे हुए हैं[23] और येह कि हम को यक़ीन हुवा कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू

الْاَرْضِ وَ لَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ

से न निकल सकेंगे और न भाग कर उस के क़ब्ज़े से बाहर हों और येह कि हम ने जब हिदायत सुनी[24] उस पर ईमान लाए तो जो

يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّ لَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَ مِنَّا

अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़[25] न ज़ियादती का[26] और येह कि हम में कुछ मुसल्मान हैं और कुछ

الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ

ज़ालिम[27] तो जो इस्लाम लाए उन्हों ने भलाई सोची[28] और रहे ज़ालिम[29]

11 : जब सफ़र में किसी ख़ौफ़नाक मक़ाम पर उतरते तो कहते हम इस जगह के सरदार की पनाह चाहते हैं यहां के शरीरों से **12 :** या'नी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने **13 :** ऐ जिन्नात ! **14 :** या'नी अहले आस्मान का कलाम सुनने के लिये आस्माने दुन्या पर जाना चाहा **15 :** फ़िरिश्तों के **16 :** ताकि जिन्नात को अहले आस्मान की बातें सुनने के लिये आस्मान तक पहुंचने से रोका जाए **17 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से **18 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत के बा'द **19 :** जिस से उस को मारा जाए **20 :** हमारी इस बन्दिश और रोक से **21 :** क़ुरआने करीम सुनने के बा'द **22 :** मोमिन, मुख़्लिस, मुत्तक़ी व अबरार **23 :** फ़िर्क़े फ़िर्क़े मुख़्तलिफ़ **24 :** या'नी क़ुरआने पाक **25 :** या'नी नेकियों या सवाब की कमी का **26 :** बदियों की **27 :** ह़क़ से फिरे हुए काफ़िर **28 :** और हिदायत व राहे ह़क़ को अपना मक़्सूद ठहराया। **29 :** काफ़िर राहे ह़क़ से फिरने वाले।

www.dawateislami.net

فَكَانُوۡا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿۱۵﴾ وَّ اَنۡ لَّوِ اسۡتَقَامُوۡا عَلَی الطَّرِیۡقَۃِ لَاَسۡقَیۡنٰہُمۡ

वोह जहन्नम के ईंधन हुए[30] और फ़रमाओ कि मुझे येह वह्य हुई कि अगर वोह[31] राह पर सीधे रहते[32] तो ज़रूर हम उन्हें

مَّآءً غَدَقًا ﴿۱۶﴾ لِّنَفۡتِنَہُمۡ فِیۡہِ ؕ وَ مَنۡ یُّعۡرِضۡ عَنۡ ذِکۡرِ رَبِّہٖ یَسۡلُکۡہُ

वाफ़िर पानी देते[33] कि इस पर उन्हें जांचें[34] और जो अपने रब की याद से मुंह फेरे[35] वोह उसे चढ़ते

عَذَابًا صَعَدًا ﴿۱۷﴾ وَّ اَنَّ الۡمَسٰجِدَ لِلّٰہِ فَلَا تَدۡعُوۡا مَعَ اللّٰہِ اَحَدًا ﴿۱۸﴾ وَّ اَنَّہٗ

अज़ाब में डालेगा[36] और येह कि मस्जिदें[37] **अल्लाह** ही की हैं तो **अल्लाह** के साथ किसी की बन्दगी न करो[38] और येह कि

لَمَّا قَامَ عَبۡدُ اللّٰہِ یَدۡعُوۡہُ کَادُوۡا یَکُوۡنُوۡنَ عَلَیۡہِ لِبَدًا ﴿ؑ۱۹﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ

जब **अल्लाह** का बन्दा[39] उस की बन्दगी करने खड़ा हुवा[40] तो क़रीब था कि वोह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जाएं[41] तुम फ़रमाओ मैं तो

اَدۡعُوۡا رَبِّیۡ وَ لَاۤ اُشۡرِکُ بِہٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾ قُلۡ اِنِّیۡ لَاۤ اَمۡلِکُ لَکُمۡ ضَرًّا وَّ لَا

अपने रब ही की बन्दगी करता हूं और किसी को उस का शरीक नहीं ठहराता तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का

رَشَدًا ﴿۲۱﴾ قُلۡ اِنِّیۡ لَنۡ یُّجِیۡرَنِیۡ مِنَ اللّٰہِ اَحَدٌ ۬ۙ وَّ لَنۡ اَجِدَ مِنۡ دُوۡنِہٖ

मालिक नहीं तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे **अल्लाह** से कोई न बचाएगा[42] और हरगिज़ उस के सिवा कोई पनाह न

مُلۡتَحَدًا ﴿۲۲﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰہِ وَ رِسٰلٰتِہٖ ؕ وَ مَنۡ یَّعۡصِ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ

पाऊंगा मगर **अल्लाह** के पयाम पहुंचाना और उस की रिसालतें[43] और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म न माने[44]

فَاِنَّ لَہٗ نَارَ جَہَنَّمَ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَاۤ اَبَدًا ﴿ؕ۲۳﴾ حَتّٰۤی اِذَا رَاَوۡا مَا یُوۡعَدُوۡنَ

तो बेशक उन के लिये जहन्नम की आग है जिस में हमेशा हमेशा रहें यहां तक कि जब देखेंगे[45] जो वा'दा दिया जाता है

30 : इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न आतशे जहन्नम के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाएंगे। **31 :** या'नी इन्सान **32 :** या'नी दीने हक़ व त़रीक़ए इस्लाम पर **33 :** कसीर, मुराद वुस्अ़ते रिज़्क़ है और येह वाक़िआ़ उस वक़्त का है जब कि सात बरस तक वोह बारिश से मह़रूम कर दिये गए थे, मा'ना येह हैं कि अगर वोह लोग ईमान लाते तो हम दुन्या में उन पर रिज़्क़ वसीअ़ करते और उन्हें कसीर पानी और फ़राख़िये ऐ़श इनायत फ़रमाते **34 :** कि वोह कैसी शुक्र गुज़ारी करते हैं। **35 :** क़ुरआन से या तौह़ीद या इबादत से **36 :** जिस की शिद्दत दम बदम बढ़ेगी। **37 :** या'नी वोह मकान जो नमाज़ के लिये बनाए गए **38 :** जैसा कि यहूदो नसारा का त़रीक़ा था कि वोह अपने गिर्जाओं और इबादत ख़ानों में शिर्क करते थे। **39 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बत़्ने नख़्ला में वक़्ते फ़ज्र **40 :** या'नी नमाज़ पढ़ने **41 :** क्यूं कि उन्हें नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इबादत व तिलावत और आप के अस्ह़ाब की इक़्तिदा निहायत अ़जीब और पसन्दीदा मा'लूम हुई, इस से पहले उन्हों ने कभी ऐसा मन्ज़र न देखा था और ऐसा बे मिस्ल कलाम न सुना था। **42 :** जैसा कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया था। "فَمَنۡ یَّنۡصُرُنِیۡ مِنَ اللّٰہِ اِنۡ عَصَیۡتُہٗ" (तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं) **43 :** येह मेरा फ़र्ज़ है जिस को अन्जाम देता हूं **44 :** और उन पर ईमान न लाए **45 :** वोह अ़ज़ाब।

فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِیْۤ

तो अब जान जाएंगे कि किस का मददगार कमज़ोर किस की गिनती कम[46] तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता

اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا

आया नज़्दीक है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा[47] ग़ैब का जानने वाला तो

یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ یَسْلُكُ

अपने ग़ैब पर[48] किसी को मुसल्लत़ नहीं करता[49] सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के[50] कि उन के

مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿۲۷﴾ لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا

आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है[51] ताकि देख ले कि उन्हों ने अपने रब के

رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَیْهِمْ وَ اَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾ ع ٢

पयाम पहुंचा दिये और जो कुछ उन के पास सब उस के इ़ल्म में है और उस ने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है[52]

اٰیاتها ٢٠ | ٧٣ سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّیَّةٌ ٣ | ركوعاتها ٢

सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में बीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿۱﴾ قُمِ الَّیْلَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ

ऐ झुरमट मारने वाले[2] रात में क़ियाम फ़रमा[3] सिवा कुछ रात के[4] आधी रात या इस से कुछ

---

46 : काफ़िर की या मोमिन की या'नी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मोमिन की मदद अल्लाह तआ़ला और उस के अम्बिया और मलाएका सब फ़रमाएंगे। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था कि येह वा'दा कब पूरा होगा ? उस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई 47 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब का इ़ल्म ग़ैब है जिसे अल्लाह तआ़ला ही जाने 48 : या'नी अपने ग़ैबे ख़ास पर जिस के साथ वोह मुन्फ़रिद है। (خازن وبیضاوی وغیرہ) 49 : या'नी इत्तिलाए़ कामिल नहीं देता जिस से ह़क़ाइक़ का कश्फ़े ताम आ'ला दरजए यक़ीन के साथ ह़ासिल हो 50 : तो उन्हें ग़ुयूब पर मुसल्लत़ करता है और इत्तिलाए़ कामिल और कश्फ़े ताम अ़त़ा फ़रमाता है और येह इ़ल्मे ग़ैब उन के लिये मो'जिज़ा होता है, औलिया को भी अगर्चे ग़ुयूब पर इत्तिलाअ़ दी जाती है मगर अम्बिया का इ़ल्म ब ए'तिबारे कश्फ़ व इन्जिला औलिया के इ़ल्म से बहुत बुलन्दो बाला व अर्फ़ओ़ आ'ला है और औलिया के उ़लूम अम्बिया ही के वसात़त और उन्ही के फ़ैज़ से होते हैं। मो'तज़िला एक गुमराह फ़िर्क़ा है, वोह औलिया के लिये इ़ल्मे ग़ैब का क़ाइल नहीं, उस का ख़याल बात़िल और अह़ादीसे कसीरा के ख़िलाफ़ है और इस आयत से उन का तमस्सुक (दलील पकड़ना) सह़ीह़ नहीं, बयाने मज़्कूरा बाला में इस का इशारा कर दिया गया है। सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुर्तज़ा रसूलों में सब से आ'ला हैं अल्लाह तआ़ला ने आप को तमाम अश्या के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए जैसा कि सिह़ाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और येह आयत हु़ज़ूर के और तमाम मुर्तज़ा रसूलों के लिये ग़ैब का इ़ल्म साबित करती है। 51 : फ़िरिश्तों को जो उन की ह़िफ़ाज़त करते हैं 52 : इस से साबित हुवा कि जमीअ़ अश्या मह़दूद व मह़सूर व मुतनाही हैं। 1 : सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बीस 20 आयतें, दो सो पचासी 285 कलिमे, आठ सो अड़तीस 838 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी

www.dawateislami.net